भारतीय पारंपरिक कलाकार एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसि एक विवेचना

डॉ. नीहारिका राठौड़, सहायक आचार्य, चित्रकला, राजकीय कन्या महाविद्यालय, अजमेर

Abstract

मनुष्य एक क्रियाशील प्राणी है। वह नितदिन कुछ नया अविष्कृत करने को तत्पर रहता है। अपने प्रतिदिन के कार्यों को सम्पादित करने हेतु सर्वाधिक आवश्यक है स्वस्थ मस्तिष्क तथा सुखी मन। इन दोनों ही स्थितियों की प्राप्ति मात्र कला द्वारा ही की जा सकती है। कला भावों की अभिव्यक्ति का सर्वाधिक सरल तथा सफल साधन है। कला के माध्यम से हम अपने गूढ़ तथा जटिल अस्पष्ट, अव्यक्त भावों को भी सफलतापूर्वक व्यक्त कर सकते हैं। यह एक आदर्शमयी शब्दहीन भाषा है. जिसके द्वारा भावों की सुन्दर अभिव्यंजना सम्भव है। इसी नैसर्गिक गुण के कारण इसे दिव्य कला माना गया है। कंप्यूटर के माध्यम से भी कलाओं का समावेश होता है। प्रागैतिहासिक काल से ही कल के विभिन्न

स्वरूप हमें प्राप्त है कालांतर में यह शास्त्रीय तथा लोक में विभाजित हो गया। उच्च शिक्षा संस्थानों में सतत विकास के लक्ष्यों में कला शिक्षा की भूमिका आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का बड़ा योगदान रहा है क्योंकि जिस प्रकार तीव्र गति से सांस्कृतिक और नैतिक स्वरूपों का बदलाव हो रहा है उसी के अंतर्गत रचनात्मक कौशल भी इन बदलावों के साथ अलग ही रूप ले रहे है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जिस प्रकार हमें त्वरित सुविधा प्रदान कर रही है इस प्रकार रोजमर्रा के जीवन में इसका उपयोग भी बहुत याद से बड़ा है। यह ऑनलाइन शिक्षा पद्धति में संस्थागत शिक्षण की दृष्टि से भी उपयोगी है शिक्षार्थियों को इसके माध्यम से सतत विकास के उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं इसके विपरीत पारंपरिक कलाएं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के साथ समावेशी नहीं हो सकती।